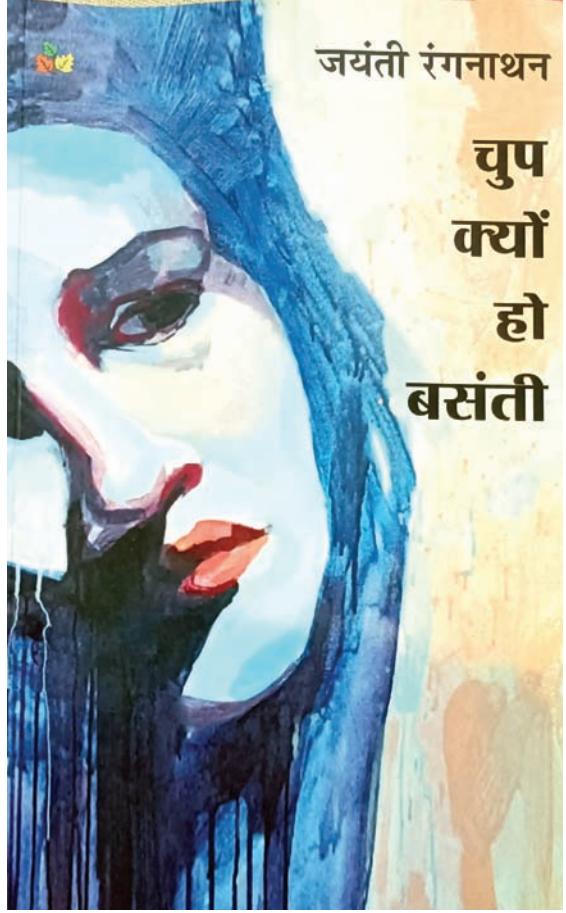


साहित्य

जयंती रंगनाथन

चुप
क्यों
हो
बसंती

उपन्यास : चुप क्यों हो बसंती
लेखिका : जयंती रंगनाथन
प्रकाशक : शिवना प्रकाशन
मूल्य : पेपर बैक संस्करण 200 रुपये

उपन्यास : चुप क्यों हो बसंती

स्त्री जीवन के आत्म संघर्षों का ताना बाना और समाज की रुद्धियों से जूझने की अविरल कथा

■ रमेश शर्मा

'चुप' क्यों हो बसंती उपन्यास है। कथा कहानी के क्षेत्र में जयंती रंगनाथन एक जाना पहचाना नाम है। वे वरिष्ठ कथा लेखिका हैं और उनकी कहानियां पाठकों के बीच शिद्धत से पढ़ी जाती रही हैं। जयंती रंगनाथन ने अपनी भूमिका में स्वयं स्वीकारा है कि यह उपन्यास 1975 के आसपास की घटनाओं पर केंद्रित है जो बहुत पहले उहोंने लिखा था। एक लंबा समय बीत जाने के इन वर्षों बाद प्रकाशित इस उपन्यास को जब मैंने पढ़ा तो मुझे ऐसा कुछ भी नहीं

लगा कि तीन बहनों और विधवा माँ वाले पितृविहीन निम्न मध्यमवर्गीय परिवारों के जीवन संघर्षों में आज भी कोई बहुत परिवर्तन हुए हैं। एक विधवा माँ और उसकी तीन बेटियों कीति, बसंती और प्रीति की शिक्षा दीक्षा को लेकर, उनकी परवरिश को लेकर, उनके शादी व्याह और परिवारिक जीवन संघर्षों को लेकर उपन्यास की घटनाएं बहुत उतार चढ़ाव से भरी हुई हैं। उतार

चढ़ाव से भरी इन घटनाओं में निम्न मध्यमवर्गीय जीवन के सजीव चित्रण हैं एक स्त्री के जीवन में प्रेम एक गुदगुदाता हुआ कोमल और मुलायम विषय है पर इस उपन्यास के स्त्री पात्रों के जीवन में आया हुआ प्रेम इतना सहज और सरल प्रसंग नहीं है। उस प्रेम के साथ एक तरफ सामयिक संघर्षों से भरी परिस्थिति जन्य कई कई रुकावटें हैं तो दूसरी तरफ एक अँथर्डॉक्स समाज की रुद्धिगत परंपराएं मुंह बाएं खड़ी मिलती हैं। %चुप क्यों हो बसंती% दरअसल उन्हीं रुकावटों, उन्हीं परंपराओं के विरुद्ध एक स्त्री के शालीनता से भरे हुए संघर्ष और उसके मुखित होने की कथा है। पिता की मृत्यु फिर बड़ी बहन कीति के विवाह के उपरान्त परिवार की जिम्मेदारी बसंती के कांधे पर आती है। आर्थिक, सामाजिक तमाम विपरीत परिस्थितियों के बाद भी यह कांधा कहीं से भी कमज़ोर नज़र नहीं आता। परिवार की आजीविका चलाने

के लिए बसंती छोटे से कपड़े की दुकान भी चलाती है। बसंती, प्रीति और उनकी विधवा माँ की मुर्बई यात्रा, मुर्बई में दुर्घटना उपरान्त कीर्ति के पति की मृत्यु, विधवा हुई कीर्ति की मनोदशा, एक कमरे के फ्लैट में रहता उनका तंगहाल संयुक्त परिवार के जीवन संघर्ष के दृश्य बहुत मर्माहत करते हैं। इन सबके बावजूद एक चीज जो सबसे ज्यादा अप्रिशेष्ट करती है, वह है बसंती की हिम्मत और उसका संघर्ष।

निम्न मध्यवर्गीय स्त्रियों के जीवन में प्रेम प्रसंग की

आत्महत्या कर लेती है।

बसंती जिसके जीवन में अपने खुद के संघर्ष और दुःख हैं। प्रेम का संघर्ष अलग है। बैंक की नौकरी का संघर्ष अलग है। इन संघर्षों के समानांतर उसका पारिवारिक संघर्ष और भी बड़ा है। दुःखी विधवा माँ को संभालने और छोटी बहन प्रीति को पढ़ा लिखा कर अपने पैरों पर खड़ा करने की एक बड़ी जिम्मेदारी उसके ऊपर आती है।

बसंती इन सारी बाधाओं को अपने जीवन संघर्षों के माध्यम से पार भी करती जाती है। छोटी बहन प्रीति पढ़ा लिखकर आई ए एस बनकर अपने

पैरों पर खड़ी हो जाती है। अनेक रुकावटों के बाद बसंती की शादी शेखर से होती है और वह एक बच्चे की माँ भी बन जाती है।

इस उपन्यास में शेखर की भाभी इंदु एक ऐसी पात्र है जो दया, करुणा, प्रेम इत्यादि जीवन मूल्यों के लिए पाठकों का ध्यान खींचती है। मुर्बई यात्रा के दौरान इस इंदु नामक पात्र से बसंती के परिवार की मुलाकात कब एक स्थायी रिश्ते का रूप लेती है पता ही नहीं चलता। यह रिश्ता अंत तक बहुत आश्वस्त करता है।

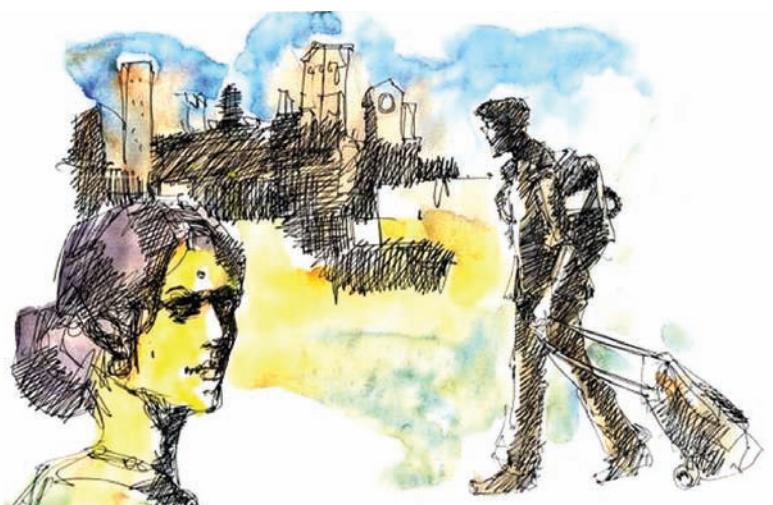
घटनाएं उन्हें बहुत थका देती हैं, उन्हें बहुत रुला देती हैं। कई बार उनकी हिम्मत, उनका संघर्ष टूटने भी लगता है।

बसंती के जीवन में शेखर जैसे युवा का आना, जिसकी शादी एक अन्य लड़की मौलश्री से होने को रहती है, उसे जदोजहद से भर देता है। इस प्रेम की राह पर अनेक उतार चढ़ाव आते हैं। प्रेम में घर परिवार बस ही जाए, यह जरूरी नहीं होता। परिवार बसते भी कई बार बसने से रह जाता है। विधवा हो चुकी कीर्ति का स्थायी ठिकाना भी अब सम्मुख नहीं बल्कि माँ का घर ही है। माँ की नापसंदी के बावजूद यहां उसकी मुलाकातें पूर्व प्रेमी कमल से होने लगती हैं। कमल उसे शादी के सपने भी दिखाता है। दोनों घर छोड़कर चले भी आते हैं पर कमल का रुद्धिवादी ठाकुर परिवार किसी भी हूद में जाकर इस शादी को रोक देता है। मज़धार में कमल जैसे पुरुष के पीछे हट जाने की वृत्ति का सदमा कीर्ति बर्दास्त नहीं कर पाती और अंतः अपने को जलाकर

ही नहीं चलता। यह रिश्ता अंत तक बहुत आश्वस्त करता है।

यह पूरा उपन्यास बसंती के जीवन के इर्द-गिर्द ही बुना गया है। एक स्त्री के जीवन में जो दूंद होते हो, उसकी जो हिम्मत होती है, निर्द होकर समाज की रुद्धियों से टकराने की उसकी जो मुखर प्रतिबद्धता होती है, यही इस उपन्यास की कथावस्तु है। 70 के दशक की परिस्थितियों को लेकर कथा लेखिका ने जब इसे लिखा होगा तब यह नहीं सोचा होगा कि 40 साल बाद भी परिस्थितियों में बहुत बदलाव हो पाना संभव नहीं होगा। इस उपन्यास के माध्यम से स्त्री जीवन की भीतरी तहों को झांकने और एक बड़े समय अंतराल में स्त्री जीवन के सामाजिक संघर्षों का आकलन करने का एक अवसर हम जैसे पाठकों को मिलता है।

इस उपन्यास को पढ़कर और भी बहुत से अनुभवों से पाठक गुजर सकते हैं।



अतिथि तुम कब जाओगे ?

■ शशद जोशी
म्हरे आने के चौथे दिन, बार-बार यह प्रश्न मेरे मन में उमड़ रहा है, तुम कब जाओगे अतिथि ! तुम कब घर से निकलोगे मेरे मेहमान !

तुम जिस सोफ़े पर दांगे पसारे बैठे हो, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर लगा है, जिसकी फ़ड़फ़ड़ी तारीखें मैं तुम्हें रोज़ दिखा कर बदल रहा हूँ यह मेहमान नवाज़ी का चौथा दिन है, मगर तुम्हारे जाने की कोई संभावना नज़र नहीं आती। लाखों मील लंबी यात्रा कर एस्ट्रोनॉट भी चांद पर इतने नहीं रुके जितने तुम रुके। उहोंने भी चांद की इतनी मिट्टी नहीं खोदी जितनी तुम मेरी खोद चुके हो। क्या तुम्हें अपना घर याद नहीं आता ? क्या तुम्हें तुम्हारी मिट्टी नहीं पुकारती ?

जिस दिन तुम आए थे, कहीं अंदर ही अंदर मेरा बटुआ कांप उठा था। फ़िर भी मैं सुकराता हुआ उठा और तुम्हारे गले मिला। मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते किया। तुम्हारी शान में ओ मेहमान, हमने दोपहर के भोजन को लंबे में बदला और रात के खाने को डिनर में। हमने तुम्हारे लिए सलाद कटवाया, रायता बनवाया और मिठाइयां मंगवाईं। इस उम्मीद में कि दूसरे दिन शानदार मेहमान नवाज़ी की छाप लिए तुम रेल के छिपे में बैठ जाओगे।

अतिथि केवल देवता नहीं होता। वह मनुष्य और कई बार राक्षस भी हो सकता है। यह देख मेरी पत्नी की आंखें बड़ी-बड़ी हो गईं। तुम शायद नहीं जानते कि पत्नी की आंखें जब बड़ी-बड़ी होती हैं, मेरा दिल छोटा-छोटा होने लगता है।

कपड़े भुल कर आ गए और तुम यहीं हो। पलंग की चादर दो बार बदली जा चुकी और तुम यहीं हो। अब इस कमरे के आकाश में ठाकों के रंगीन गुब्बारे नहीं उड़ते। शब्दों का लेन-देन मिट गया। अब करने को चर्चा नहीं रही। परिवार, बच्चे, नौकरी, राजनीति, रिश्तेदारी, पुराने दोस्त, फ़िल्म, साहित्य, यहां तक कि आंख मार-मार कर हमने पुरानी प्रेमिकाओं का भी ज़िक्र कर लिया। सारे विषय ख़त्म। तुम्हारे प्रति मेरी प्रेमाभावना गाली में बदल रही है। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि तुम कौन-सा फ़ेविकोल लगा कर मेरे घर में आए हो ?

पत्नी पूछती है, “कब तक रहेंगे ये ?”

जबाब में मैं कंधे उचका देता हूँ, जब वह प्रश्न पूछती है, मैं उत्तर नहीं दे पाता। जब मैं पूछता हूँ, वो चुप रह जाती है। तुम्हारा बिस्तर कब गोल होगा अतिथि ?

मैं जानता हूँ कि तुम्हें मेरे घर में अच्छा लग रहा है। सबको दूसरों के घर में अच्छा लगता है। यदि लोगों का बस चलता तो वे किसी और के घर में रहते, किसी दूसरे की पत्नी से विवाह करते। मगर घर को सुंदर और होम को स्वीट होम इसीलिए कहा गया है कि मेरे घर वापिस लौट जाएं। मेरी रातों को अपने खर्खटों से गुज़ाने के बाद अब चले जाओ और दोस्त ! देखो, शारफ़त की भी एक सीमा होती है और उसे दोस्त भी देता है। अब गले में अंजाब आते हैं। यदि वह अपने दोस्त के घर तक आ जाए, तो वह अपनी रोजी के लिए जलाता है, जिससे बरात के लोग अपना रास्ता पास करते हैं। मैंने कहा, “नाऊ, मुझे आज कहीं नहीं जाना है।” और किवाड़ मैंने बन्द कर लिया।

(3)

“धर्म लोगे, धर्म ?”

प्रादेशिकी

चारों धारों में रील पर रोक
सरकार का व्यावहारिक
निर्णय : भट्ट

शिमला, 18 मई (देशबन्धु)। केंद्र में ईडिया गठबंधन की सरकार बनते ही देश के लोकतंत्र को मजबूत किया जाएगा। आज देश को अस्थिर करने का काम जो भाजपा ने किया है उसका जबाब देश की जनता दे रही है जिसका नतीजा 4 जून को आएगा। यह बात

■ 10 साल का रिपोर्ट कार्ड पेश करने के बाजाय देश को बांटने का काम कर रहे मोदी

कांग्रेस प्रदेश उपाध्यक्ष नेश चौहान ने एक प्रतिक्रिया बताई कि दौरान कहीं। उन्होंने पीएम मोदी पर निशान साधते हुए कहा कि कांग्रेस की कोशिश की है। पीएम और भाजपा नेताओं ने देश के हर बाग को विभाजन करने का काम किया है जिसका जबाब उन्हें 4 जून को मिल जाएगा। नेश चौहान ने कहा कि 10 साल तक राज करने के बाद वे अपना रिपोर्ट कार्ड जनता के पास देंगे नहीं कर रहे बल्कि मुस्तिर पर जनता को बांटने का काम कर रहे हैं। उन्होंने पीएम मोदी के उस बयान की कड़ी निंदा की है



जिसमें पीएम ने कहा है कि कांग्रेस आगर सत्ता में आई तो राम मंदिर पर खुलोलाहट चलाएगी। उन्होंने मोदी के इस बयान पर की आपत्ति जारी है और सावनजिक तौर पर माफी मांगने की मांग की है। चौहान ने कहा कि मुख्यमंत्री मोदी को अपनी हाथ निश्चित दिखाई दे रही है जिसकी खौलोलाहट में मुख्यमंत्री चुनाव प्रचार के 40 दिनों के मालासूखी और हिन्दू-मुस्लिम और मंदिर-मस्जिद की बात कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि 140 करोड़ की जनता वाले देश में मुद्दों की कोई कमी नहीं है। लेकिन भाजपा राम जी और मंदिर के नाम पर देश का ध्यान भटकाने का काम कर रहे हैं। भाजपाईयों का काम कांग्रेस पार्टी और ईडिया गठबंधन के नेताओं को गालियां

देने का रह गया है। भाजपा की गोप्यस के मैनफेस्टो से खौलोलाहट में है जिसका वे नेतृत्व प्रचार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के न्याय पत्र से युवा, किसान, महिलाओं को न्याय मिलेगा। नेश चौहान ने कहा कि प्रेस की चारों लोकतंत्र और 5 विधानसभा सीटों पर कांग्रेस प्रत्यारूपी भारी बहुमत से जीत हासिल करेंगे। उन्होंने दलबदलओं पर निशान साधते हुए कहा कि उप-चुनाव में साजिश रचने वालों के खिलाफ

■ 140 करोड़ की जनता वाले देश में मुद्दों की कोई कमी नहीं है। लेकिन भाजपा राम जी और मंदिर के नाम पर देश की जनता का ध्यान

भटकाने का काम कर रहे हैं : नेश चौहान

गुरुसा साफ दिखाई दे रहा है। उसी तरह निर्दित तीन विधायक तीनों की हालत भी बहुत ही है वे एप्समांग बढ़े हैं। और न ही कभी भविष्य में बढ़े।

नेश चौहान ने नेता प्रतिष्ठक जयराम ठाकुर और भाजपा राजीव बिंदल पर भी निशान साधते हुए कहा कि वे बताएं कि उन्होंने वार्षीय अध्यक्ष से इस्तीफा दिया। नेश चौहान ने कहा कि जयराम ठाकुर को कर्ज में चुनाव सभा सीटों के साथ 6 विधानसभा उपचुनाव की सीटें कांग्रेस भारी बहुमत के साथ जीतेगी।

प्रेस की जनता में विषय में बैठने का अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने वार्षीय अध्यक्ष तीनों को गोप्यस की चालते विलम्ब पर भी निशान साधते हुए कहा कि वे बताएं कि उन्होंने पार्टी अध्यक्ष से इस्तीफा दिया। नेश चौहान ने जानकारी देने की हालत भी बहुत हुआ 551 लोगों को अपनी जन वर्गीय लेन्डिंग भाजपा के लिए गोप्यस की चालते विलम्ब पर जारी दिया। अपस्त्री ने नड़ा से पूछा कि अज वे किस कांग्रेस के विवरण विवरण सुखविंदर सिंह सुक्खु को चुनाव प्रवार के द्वारा नाम पर राम राम सुखविंदर सिंह दिल्ली विलम्ब राम सुखविंदर सिंह सुक्खु को चुनाव गिल राम है। चारों लोकसभा सीटों के साथ 6 विधानसभा उपचुनाव की सीटें कांग्रेस भारी बहुमत के साथ जीतेगी।

उन्होंने दलबदलों पर कांग्रेस

प्रदेश की अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने दलबदलों में साजिश रचने वालों के खिलाफ

नहीं दिया। जिसका बोझ कांग्रेस सरकार पर पड़ा। डबल इंजन की सरकार में पेपर भर्ती का खेल चलाता रहा कभी कलर्क भर्ती का पेपर बिका तो कभी पुलिस भर्ती पेपर 5 से 7 लाख में बिका। चौहान ने विधायक पर लोकतंत्र में चुनी ही सरकार प्रचार के नाम पर विधायक रचने का भी आरोप लगाया। जो चौर दरवाजे से सत्ता में आना चाहते थे लेकिन वे अपने नापक समूह विश्वास भरने के उपर उन्होंने कहा कि उप-चुनाव पर भाजपा को चुनाव में भाजपा को

प्रदेश की अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने दलबदलों में भी नहीं दिया। जिसका बोझ कांग्रेस सरकार पर पड़ा।

उन्होंने दलबदलों पर कांग्रेस

प्रदेश की अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने दलबदलों में साजिश रचने वालों के खिलाफ

नहीं दिया। जिसका बोझ कांग्रेस सरकार पर पड़ा।

उन्होंने दलबदलों पर कांग्रेस

प्रदेश की अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने दलबदलों में साजिश रचने वालों के खिलाफ

नहीं दिया। जिसका बोझ कांग्रेस सरकार पर पड़ा।

उन्होंने दलबदलों पर कांग्रेस

प्रदेश की अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने दलबदलों में साजिश रचने वालों के खिलाफ

नहीं दिया। जिसका बोझ कांग्रेस सरकार पर पड़ा।

उन्होंने दलबदलों पर कांग्रेस

प्रदेश की अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने दलबदलों में साजिश रचने वालों के खिलाफ

नहीं दिया। जिसका बोझ कांग्रेस सरकार पर पड़ा।

उन्होंने दलबदलों पर कांग्रेस

प्रदेश की अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने दलबदलों में साजिश रचने वालों के खिलाफ

नहीं दिया। जिसका बोझ कांग्रेस सरकार पर पड़ा।

उन्होंने दलबदलों पर कांग्रेस

प्रदेश की अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने दलबदलों में साजिश रचने वालों के खिलाफ

नहीं दिया। जिसका बोझ कांग्रेस सरकार पर पड़ा।

उन्होंने दलबदलों पर कांग्रेस

प्रदेश की अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने दलबदलों में साजिश रचने वालों के खिलाफ

नहीं दिया। जिसका बोझ कांग्रेस सरकार पर पड़ा।

उन्होंने दलबदलों पर कांग्रेस

प्रदेश की अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने दलबदलों में साजिश रचने वालों के खिलाफ

नहीं दिया। जिसका बोझ कांग्रेस सरकार पर पड़ा।

उन्होंने दलबदलों पर कांग्रेस

प्रदेश की अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने दलबदलों में साजिश रचने वालों के खिलाफ

नहीं दिया। जिसका बोझ कांग्रेस सरकार पर पड़ा।

उन्होंने दलबदलों पर कांग्रेस

प्रदेश की अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने दलबदलों में साजिश रचने वालों के खिलाफ

नहीं दिया। जिसका बोझ कांग्रेस सरकार पर पड़ा।

उन्होंने दलबदलों पर कांग्रेस

प्रदेश की अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने दलबदलों में साजिश रचने वालों के खिलाफ

नहीं दिया। जिसका बोझ कांग्रेस सरकार पर पड़ा।

उन्होंने दलबदलों पर कांग्रेस

प्रदेश की अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने दलबदलों में साजिश रचने वालों के खिलाफ

नहीं दिया। जिसका बोझ कांग्रेस सरकार पर पड़ा।

उन्होंने दलबदलों पर कांग्रेस

प्रदेश की अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने दलबदलों में साजिश रचने वालों के खिलाफ

नहीं दिया। जिसका बोझ कांग्रेस सरकार पर पड़ा।

उन्होंने दलबदलों पर कांग्रेस

प्रदेश की अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने दलबदलों में साजिश रचने वालों के खिलाफ

नहीं दिया। जिसका बोझ कांग्रेस सरकार पर पड़ा।

उन्होंने दलबदलों पर कांग्रेस

प्रदेश की अद्वेद दिया है जो इहें हजम नहीं हो रहा है। उन्होंने दलबदलों में साजिश रचने वालों के खिलाफ

<p

सर्वाधिक घटने वाले शेयर	
महिंदा एंड महिंदा	5.97 प्रतिशत
जेएसडब्ल्यू स्टील	2.36 प्रतिशत
अल्ट्रासिमको	1.85 प्रतिशत
कोटक बैंक	1.50 प्रतिशत
आईटीसी	1.24 प्रतिशत

सर्वाधिक घटने वाले शेयर	
टीमीएस	1.70 प्रतिशत
एच्सीएल टेक	1.11 प्रतिशत
हिन्दुस्तान यूनिलिवर	1.00 प्रतिशत
नेस्टली इंडिया	0.85 प्रतिशत
बजाज फिनसर्व	0.73 प्रतिशत

सरफ़िा	
सोना (प्रति दस ग्राम)स्टॉर्टेंड	73,310
बिंदु	47,320
गिरिनी (प्रति आत ग्राम)	39,795
चांदी (प्रति किलो) टच हाईर	74,400
बातवा	70,857
चांदी सिक्का लिवाली	900
बिकावाली	880

मुद्रा निमित्य

मुद्रा	क्र.	दिनांक
आमेको डॉलर	67.77	78.57
पौंड स्टर्लिंग	90.94	105.45
यूरो	76.54	88.78
चीन युआन	08.24	13.38

अनाज

अनाज	क्र.	दिनांक
देसी गेहूँ-एम्पी	2400-3000	
गेहूँ दाल	2600-2700	
आटा	2800-2900	
मैदा	2900-2950	
चोकर	2000-2100	

मोटा आनाज

आनाज	क्र.	दिनांक
गाजर	1300-1305	
मक्का	1350-1500	
ज्वार	3100-3200	
जौ	1430-1440	
काबूली चमा	3500-4000	

शुगर

शुगर	क्र.	दिनांक
चीनी एस	3740-3840	
चीनी एम	4000-4100	
गिर लिवारी	3620-3720	
गुड़	4400-4500	

दाल-दलहन

दाल-दलहन	क्र.	दिनांक
चना	6100-6200	
दाल चना	7100-7200	
मसूर काली	7550-7650	
उड़द दाल	10600-10700	
मूग दाल	9850-9950	
अरहर दाल	11700-11800	

अर्थ जगत्

वैश्विक व्यापार में अपनी हिस्सेदारी फिर से हासिल करेगा भारत : डीपीआईआईटी



दो तीन वर्षों में भारत दुनिया में पांचवें से तीसरे स्थान पर पहुंच जाएगा।

राष्ट्रीय राजधानी में सीआईआई वैश्विक व्यापार शिखर सम्मेलन 2024 के दूसरे दिन एक सत्र में राजेश कुमार सिंह ने कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में अपनी ऐविलासित दिखाएगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के सफल होगा।

उद्घोषणा के बाद दुनिया में संबोधन में कहा कि विकास दर में तेजी के आधार पर देश दुनिया के व्यापार और निवेश में संभवतः भारत के

